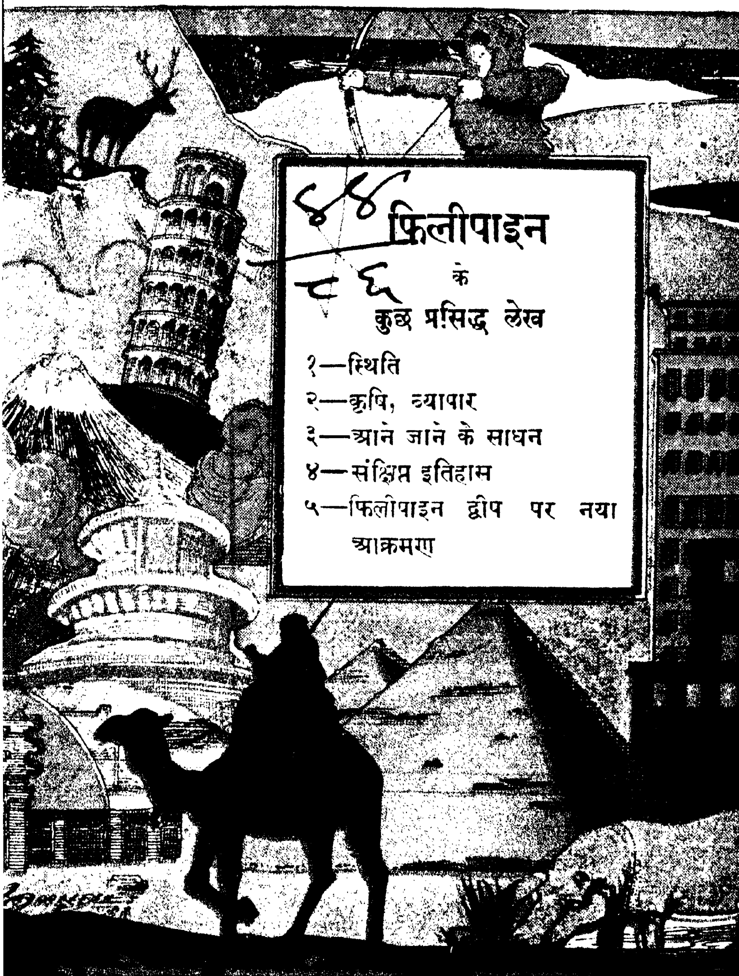
देश दर्शन

फिलीपाइन



फ़िलीपाइन के कुछ प्रसिद्ध लेख

दिसम्बर १९४१] [पौष १९९८

देश-दर्शन

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ३] [संख्या ६

फिलीपाइन

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This copy As. -/6/-

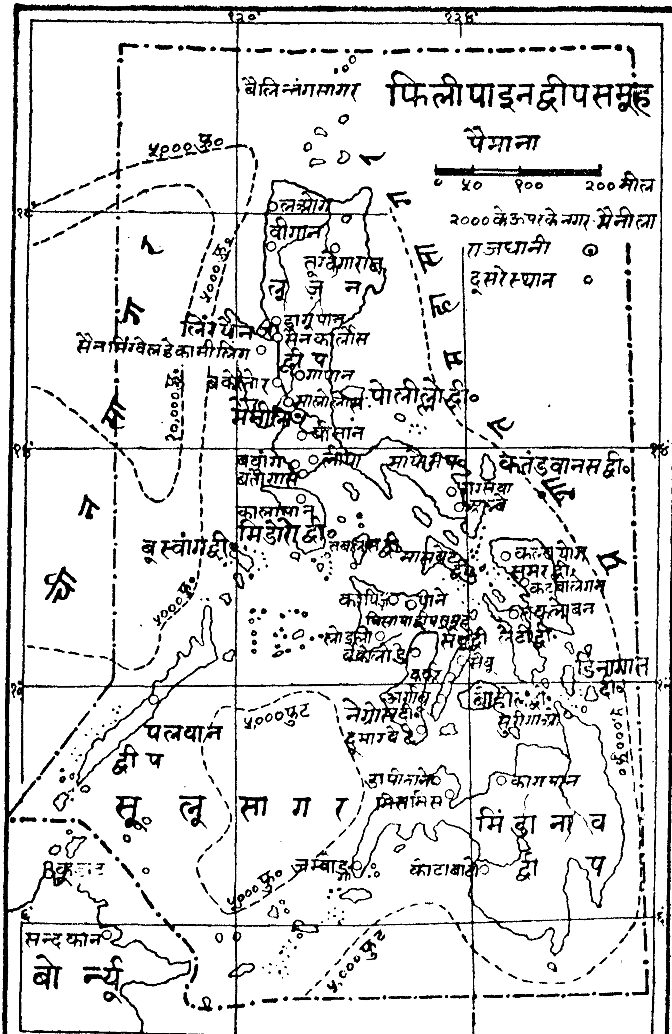
वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

विषय-सूची

स्थिति

स्पेन के राजा फिलिप द्वितीय की स्मृति में इन द्वीपों का नाम फिलीपाइन द्वीपसमूह पड़ा। फिलिपाइन द्वीप समूह में ७०८३ द्वीप हैं। इनमें केवल ४६२ द्वीप ऐसे हैं जिनका क्षेत्रफल १ वर्गमील से ऊपर है शेष अत्यन्त छोटे हैं। सब से उत्तरी लूज़न द्वीप (४०८१४ वर्ग मील) और सब से अधिक दक्षिण मिंडनाओ (३६६०६ वर्ग मील) द्वीप में समस्त द्वीप समूह का दो तिहाई क्षेत्रफल आ जाता है। समस्त द्वीप समूह का क्षेत्रफल ११४,४०० वर्गमील है जो हमारे संयुक्त प्रान्त के प्रायः बराबर है। लेकिन यहाँ की जन-संख्या डेढ़ करोड़ से कुछ कम है जो संयुक्त प्रान्त की एकतिहाई भी नहीं है।

फिलीपाइन द्वीप समूह दक्षिणी-पूर्वी एशियाई तट से ५७० मील दूर हैं। ये द्वीप विषुवत रेखा के उत्तर में ४.२१ अक्षांश से आरम्भ होते हैं और २१'१० उत्तरी तक फैले हुये हैं। ११६'४० पूर्वी देशान्तर और १२६'३४ पूर्वी देशान्तर के बीच में सब द्वीप समूह आ जाते हैं। इस प्रकार उत्तर से दक्षिण तक इनकी अधिक से अधिक लम्बाई ११५२ मील और पूर्व से पश्चिम तक इनकी अधिक से अधिक चौड़ाई ६८८ मील है। फिली-


फिलीपाइन द्वीपसमूह
पैमाना
० ५० १०० २०० मील
राजधानी
दूसरे स्थान
लूज़न
मैनीला
पोलीलो द्वी.
कतंडवानस द्वी.
मिंडोरो द्वी.
समर द्वी.
डिनागात द्वीप
नेग्रोस द्वी.
पलवान द्वीप
सूलू सागर
मिंडानाव द्वीप
कोटाबाटो
सन्दकान
बोर्न्यू



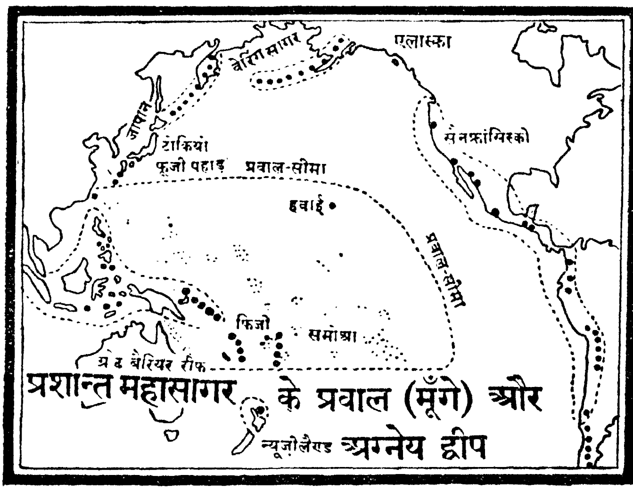
पाइन द्वीपसमूह के उत्तर-पश्चिम में तूफानी चीन सागर है। दक्षिण में सेलेबीस सागर और बोर्नियो द्वीप है। पूर्व की ओर विशाल प्रशान्त महासागर है। इस समूह का उत्तरी छोटा द्वीप यामी फार्मूसा से केवल ६५ मील रह जाता है। दक्षिण में सालवाग द्वीप बोर्नियो से केवल ३० मील दूर है।

फिलीपाइन द्वीपसमूह में प्रायः ढाई हजार द्वीप नाम मात्र के हैं। केवल ११ द्वीप ऐसे हैं जिनका क्षेत्रफल १००० वर्ग मील से अधिक है। सबसे बड़े लूज़न और मिंडनाओ के बाद सामार (५१२४ वर्ग मील) नीग्रोस (४६८३ व० मी०) पलवान (४५०० व० मी०) पेने (४४८८ व० मील) मिंडोरो (३७६४ व० मील) लिटे (२७६६ व० मील) सेबू (१६६५ व० मील) बोहोल (१५३४ व० मील) मस्बेट (१२५५ व० मील) यहां के बड़े द्वीप हैं। इन बड़े द्वीपों के अतिरिक्त फिलीपाइन द्वीपसमूह में कई और छोटे छोटे द्वीपसमूह शामिल हैं। इनमें लूज़न के उत्तर में बेबुयेन और बन्तेन, बीच में विसायास, कगायान, कलमेन द्वीपसमूह हैं। दक्षिण-पश्चिम की ओर सूलू द्वीपसमूह में २७२ द्वीप शामिल हैं। इनमें जोलो सबसे बड़ा है।

सूचना

फिलीपाइन द्वीपसमूह उस पर्वतीय प्रदेश के बचे हुये भाग हैं जो प्रशान्त महासागर में डूब गये। इस पर्वतीय प्रदेश में इस समय भी उथल पुथल हो रही है। इसी से इस द्वीपसमूह के अधिकतर भागों में ज्वालामुखी पहाड़ हैं जहां भूचाल अक्सर आया करते हैं। पहाड़ प्रायः समुद्र-तट तक चले गये हैं। इसलिये तटीय मैदान बहुत संकुचित और थोड़े हैं। पर्वत-श्रेणियों की दिशा प्रायः उत्तर-दक्षिण की ओर है। लूज़न द्वीप की केन्द्रवर्ती कार्डिलेरा श्रेणी सर्व प्रधान है। वास्तव में यहां दो तीन पर्वत श्रेणियां हैं जो एक दूसरे की समानान्तर हैं। इनकी औसत ऊँचाई प्रायः ६००० फुट है। लूज़न द्वीप के उत्तर में ही सबसे बड़ा मैदान है जिसकी लम्बाई १५० मील और चौड़ाई ५० मील है। ज्वालामुखी पहाड़ अकेली पहाड़ियों के रूप में दूर दूर बिखरे हुये हैं। नीग्रोस द्वीप में एक ज्वालामुखी पहाड़ी (केनलाओन) ७८०० फुट ऊँची है। मिंडनाओ द्वीप में कई पर्वत श्रेणियां हैं। पूर्व की ओर द्वाता श्रेणी सर्व प्रधान है। इसके पश्चिम में अगूसन की उपजाऊ घाटी है जो चालीस पचास मील चौड़ी है। अधिक पश्चिम में यहां की सबसे

बड़ी नदी रियोग्राँडी मिडनाओ की घाटी है। नदी के दक्षिणी भाग में फिलीपाइन द्वीप की सब से अधिक (९६१० फुट) ऊँची चोटी माउंट आवो है।



प्रशान्त महासागर के प्रवाल (मूँगे) और आग्नेय द्वीप

यहां की सभी नदियां प्रायः उत्तर की ओर बहती हैं पहाड़ देवदारू और दूसरे पेड़ों के घने जंगलों से घिरे हैं। नदियों की घाटियां बड़ी उपजाऊ हैं। इन्हीं में सबसे घनी आबादी है। इस द्वीप समूह में कुछ प्रवाल (मूँगे के) द्वीप भी हैं।

जलवायु

फिलीपाइन द्वीपसमूह उष्ण कटिबन्ध में स्थित है। यहां का औसत तापक्रम प्रायः ८० अंश फारेन हाइट रहता है। परम तापक्रम ६० अंश से कभी अधिक नहीं होता है। लघु तापक्रम ६० अंश फारेन हाइट से अधिक नीचा नहीं होता है। मई महीने में सब से अधिक गरमी पड़ती है। जनवरी महीना सब से अधिक शीतल रहता है। भीतर वाले भाग तटीय प्रदेश की अपेक्षा अधिक गरम हो जाते हैं।

यहां की हवा प्रायः नम रहती है। कुछ भागों में १५० इंच वर्षा होती है। औसत से यहां ८० इंच पानी बरसता है। किसी किसी वर्ष १६० इंच तक पानी बरस जाता है। ३८ इंच से कभी कम पानी नहीं बरसता है। उत्तरी-पूर्वी हवायें शीत काल में चलती हैं। उत्तरी द्वीपों में इन्हीं से वर्षा होती है। द्वीपसमूह के बड़े भाग में दक्षिणी पश्चिमी मानसूनी हवाओं से वर्षा होती है। औसत से फिलीपाइन द्वीपसमूह में वर्ष भर में १५६ दिन ऐसे होते हैं जिनमें पानी बरसता है। शेष सूखे रहते हैं। जब तूफानी हवायें चलती हैं तब ज़ोर की बाढ़ आती है। वर्षा ऋतु में प्रायः दलदल हो जाते हैं और

सड़कों पर चलना कठिन हो जाता है। खुश्क ऋतु में धरती में दरारें पड़ जाती हैं और सड़कों पर धूल उड़ने लगती है। जनवरी से मई महीने तक सूखी ऋतु रहती है। जून से अक्तूबर तक प्रबल वर्षा होती है। नवम्बर और दिसम्बर महीने कुछ कुछ खुश्क रहते हैं।

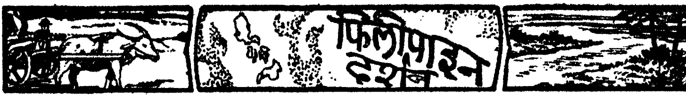
इस प्रकार फिलीपाइन द्वीपसमूह की जलवायु उष्णार्द्र कही जा सकती है।



बनस्पति

उष्णार्द्र जलवायु होने के कारण फिलीपाइन द्वीप समूह का अधिकतर भाग घने जंगलों से घिरा हुआ है। इससे यहां के स्थल मार्ग बड़े दुर्गम हैं। ऊँचे भागों की बनस्पति हिमालय के समान कुछ ठंडे प्रदेशों की सी है। समुद्र तट के दलदली प्रदेशों में गोरन और ऐसे पौधे होते हैं जिनकी जटिल जड़ें बहुत बड़ी होती हैं और पत्तियां बहुत कम होती हैं। कुछ भागों में आस्ट्रेलिया के समान छाल छोड़ने वाले पेड़ होते हैं। रबड़, आबनूस, बांस, बेत, ताड़ और नारियल यहाँ के बड़े मूल्यवान पेड़ होते हैं। कुछ पेड़ों से गोंद, मसाला और दूसरी काम की चीज़ें मिलती हैं।

इस द्वीपसमूह के कई द्वीपों में लाल और भूरे हिरण पाये जाते हैं। मिंडनाओ द्वीप में टिमराऊ या छोटा भैंसा पाया जाता है। नेवला, बनबिलाव और दूसरे मांसाहारी पशु भी यहां बहुत हैं। पड़ोस के समुद्री जल में शार्क और कई प्रकार की दूसरी मछलियों की भरमार है। इन्हें चीनी लोग बहुत पसंद करते हैं। दक्षिण के गरम द्वीपों के पड़ोस में मूँगा और स्पंज भी निकाला जाता है।



कृषि

इस द्वीपसमूह का आधे से अधिक भाग जंगल से घिरा हुआ है। १/८ भाग में खेती होती है। १/६ भाग में घास और खुला हुआ मैदान है। कुछ भाग में दलदली बनस्पति है। कुछ भागों का अब तक ठीक ठीक पता नहीं लग पाया है। इस द्वीप समूह का प्रधान पेशा खेती है। यहां के मूल निवासी पुराने ढंग से खेती करते हैं। लगभग ३००० बड़े बड़े फार्म (खेत) अमरीकन लोगों के हाथ में हैं। जिनमें नये ढंग की खेती होती है। ज्वालामुखी की उपजाऊ भूमि, प्रबल वर्षा और तेज़ धूप धान, गन्ना, नारियल (६ करोड़ पेड़), तम्बाकू नील और हेम्प की खेती के लिये बड़ी अनुकूल है। यहां की प्रधान उपज हेम्प का रेशा रस्से बनाने के काम आता है। आम, केला, चीको, क्रेज़ोन, तरबूज, अमरूद और दूसरे फल भी बहुत होते हैं। नारियल के फलों को बाहर भेजने के लिये यहां के लोग फलों को जटाओं में बांधकर बड़े बड़े (१०० फुट लम्बे १० फुट चौड़े) बेड़े बना लेते हैं। मटर, सकरकन्द और सुपारी भी सभी भागों में होती है। कुछ लोग बाँस के किल्ले भी खाते हैं।

किसान लोग गाय, बैल, केराबाओ (Carabao), घोड़े, खच्चर, भेड़, बकरी और सुअर पालते हैं।

खनिज—कुरून्दुम, फिटकरी, अस्फाल्ट, सीमेंट, कोयला, जिप्सम, चूना, अभ्रक लोहा, नमक, पत्थर, गन्धक, सोना, ताँबा, चांदी, सीसा यहाँ के प्रधान खनिज हैं। कुछ भागों में मिट्टी का तेल भी पाया जाता है। खनिज पदार्थों के निकालने का काम पिछड़ा हुआ है। अधिकतर कम्पनियाँ अमरीकन लोगों के हाथ में हैं।

निवासी

फिलिपाइन द्वीप की जनसंख्या लगभग डेढ़ करोड़ है। इनमें प्रायः एक करोड़ मूलनिवासी हैं जो भूरे या सांवले रंग के हैं। ७५,००० चीनी, २५००० जापानी, ७००० अमरीकन, ४००० स्पेनवासी, १००० ब्रिटिश हैं। जर्मन, फ्रेंच, स्विस और दूसरे लोगों की जनसंख्या बहुत कम है।

यहां के प्रधान निवासी फिलीपिनो हैं। इनके पूर्वज मलय प्रायद्वीप से आये थे। स्पेन वासियों ने अपना राज्य स्थापित करने के बाद इन्हें ईसाई बना लिया। विसय, विसायन, तागलोग, इलोको, बिकोल, पम्पांगन, इबांग, सम्बल आदि इनकी आठ उपजातियाँ हैं। ये सब के सब ईसाई हैं। जो लोग ईसाई नहीं बने और अपने पुराने धर्म पर आरूढ़ हैं वे १८ उपजातियों में बटे हुये हैं। इनमें कुछ बौने हबशी, कुछ आस्ट्रेलिया के हबशी, कुछ जापानी ऐनू और इण्डोनेशिया हबशी हैं। मोरो लोग सात उपजातियों में बटे हुये हैं और अधिकतर सूलू द्वीप समूह में रहते हैं।

कुछ लोगों का कहना है कि फिलीपाइन द्वीप समूह के प्राचीन निवासी बौने हबशी हैं। जब मलय द्वीप के

लोगों ने यहां आक्रमण किया तो उन्हें समुद्र-तट और उपजाऊ घाटियों से भगा दिया। स्पेन के विजेताओं ने धीरे धीरे इन हवशियों को पहाड़ की ओर भगा दिया। रेतो, बालूगा, दुमागा, ममनुआ और मांग्विना हबशी काले रंग के होते हैं। वे कमर में एक रस्सी की करधनी बांध कर केवल एक लंगोटी लगाये रहते हैं। उनका शेष शरीर एक दम नङ्गा रहता है। उनकी स्त्रियां कमर के चारों ओर कुछ चौड़ा कपड़ा लपेटे रहती हैं। वे अपनी गर्दन में कुछ मालायें भी पहने रहती हैं। ये लोग चार फुट ८ इञ्च लम्बे होते हैं। इनका रंग काला, बाल ऊन की तरह गुथे हुये और ओठ मोटे होते हैं। मलय निवासी इनको सेमांग कहते हैं। ये लोग घर नहीं बनाते हैं। वे घुमक्कड़ जीवन बिताते हैं। मुर्दों को गाड़ते और मृतक आत्माओं की पूजा करते हैं। कभी कभी ये ईसाइयों को मार डालते हैं और उनके गाय बैल चुरा ले जाते हैं। ये खेती नहीं करते हैं और जंगली फलों और जङ्गली जानवरों के मांस से निर्वाह करते हैं। वे धनुष-बाण रखते हैं जंगली शहद इन्हें बड़ा अच्छा लगता है। इनकी भाषा बड़ी विलक्षण होती है। इनसे

व्यापार करने वाले इनके पड़ोसी इसके कुछ शब्द सीख लेते हैं।

ये लोग पूर्णिमा के दिन बहुत नाचते हैं और कुछ लोग बिजली (विद्युत) के चमकने और कड़कने के समय सुअर की बलि चढ़ाते हैं। यहाँ की स्त्रियाँ सभी विदेशियों के साथ विवाह कर लेती हैं इसलिये यहाँ बहुत सी वर्ण-संकर जातियाँ हो गई हैं। बालूगा, मननुमा, और दुमागा इनमें प्रधान हैं। तागल या ताग लोग अधिक-तर लूजन द्वीप के मध्य भाग में रहते हैं। इनकी संख्या बीस-पच्चीस लाख है। ये लोग बड़ी सफाई से रहते हैं। और आवश्यक कपड़े पहनते हैं। इनकी स्त्रियाँ गले में सोने का हार पहनती हैं। पहले ये मूर्ति-पूजा करते थे। ये लिखना जानते हैं और बड़े संगीत प्रेमी होते हैं। इस समय ये लोग ईसाई हो गये हैं। फिर भी ये बड़े अन्ध-विश्वासी हैं और अपशकुन को बहुत मानते हैं। इनकी गालियों में वहां के भूगोल की झलक है। इनकी गालियाँ इस प्रकार हैं। तुम्हें मगर खा जावे (यहां की नदियां छोटी होने पर भी मगरों से भरी पड़ी हैं। तुम पर बिजली गिरे। तुम पर बवंडर चले। (इधर तूफान बहुत चलते

हैं और बिजली कड़कती है), धरती फटे और तुम्हें निगल जावे (इस आग्नेय प्रदेश में धरती का फटना और भूकम्प का आना सर्व साधारण है)।

विवाह की इच्छा करने वाला भावी पति लड़की के पिता के यहां दो वर्ष तक सेवा करता है। वह खेत जोतने बोने, छप्पर छाने और नाव की मरम्मत आदि काम करने में सहायता करता है। वह इस प्रकार आचरण करता है कि पिता कभी नाराज़ न होने पावे छोटी उम्र में विवाह कभी नहीं होता। विवाह के समय बड़ा भोज होता है। उस समय भात, सुअर का मांस, मछली, मिठाई, फल, अचार, सिरप और कहवा परोसा जाता है। शराब और सिगार भी पिलाई जाती है।

तगल लोग बड़े अतिथि सेवी होते हैं। वे पक्के मल्लाह और निडर सिपाही होते हैं।

पम्पांगो लोग तागल लोगों के पड़ोसी हैं। लेकिन इनकी भाषा भिन्न है। इनकी संख्या प्रायः तीन लाख है। ये बड़े चतुर किसान हैं। ये मछली भी खूब मारते हैं और जंगलों में जानवरों का शिकार किया करते हैं।

इनकी तूलिसान उपजाति ने आरम्भ में स्पेन वालों को खूब हैरान किया था।

जम्बाल लोग बहुत थोड़े हैं। ये हबशी हैं और प्रायः ईसाई हो गये हैं।

पंगासिनानी लोग पंगासिनान प्रान्त से उत्तरी पश्चिमी भाग में रहते हैं।

इलोकानो लोग बड़े मेहनती और लड़ाका होते हैं। ये लूज़न द्वीप के उत्तरी-पश्चिमी तट पर रहते हैं। इनके ढोर (गाय बैल) बड़े सुन्दर होते हैं।

इबांग लोग बेबुयान और बातन द्वीपों में रहते हैं। ये लोग बड़े बीर होते हैं। इन्होंने स्पेनवासियों का वीरता से सामना किया।

इगोरोत लोग बड़े परिश्रमी और वीर योद्धा होते हैं। ये दाढ़ी रखते हैं। ये लोग गांवों में रहते हैं। इनमें कुछ लोग अपने मुर्दों को गाड़ते हैं। कुछ उन्हें आग में सुखाते हैं। ये बड़े रोजगारी होते हैं।

इसीनय लोग पगासिनान के उत्तरी भाग में रहते हैं।

अबाकस जाति के लोग कराबालो के दक्षिण

करंग्लान के इधर उधर रहते हैं। यह पहले बड़े तथा साहसी होते थे। अब यह ईसाई हो गये हैं।

इटालोन लोग न्वेवा विज्काया के दक्षिण-पश्चिम मागात नदी के तटीय गांवों तथा नगरों में रहते हैं। यह लोग भाले, ढाल तथा लकड़ी के बड़े चाकू बांधते हैं। पहले ये बड़े बीर तथा साहसी होते थे और लोगों के सिर का शिकार करते थे। जिस किसी को ये मारते थे उसका मष्तिक तथा हृदय ये लोग भक्षण कर लेते थे। जिससे इनमें उसकी बीरता तथा बुद्धि प्रवेश कर जाते। अब ये लोग ईसाई हो गये हैं।

इबीलोस लोग सपुनान नदी के निकलने के स्थान के समीपवर्ती स्थानों में रहते हैं। यह लोग पहाड़ी बनों में रहते हैं। यह जंगली हैं और मार्ग चलने वालों का शिकार करते हैं। शिकार किये हुये लोगों के दांतों से यह अपने हथियारों को सजाते हैं। यह छोटे डील डौल के होते हैं।

इलोनगोट—यह जाति कराबालो डे बलेर पर्वत के पूर्वी तट पर रहते हैं। यह लोग जंगली हैं और बड़े बड़े बाल रखते हैं। अब भी यह जंगली वस्त्र (छाल)

धारण करते हैं। इनकी आंखें लम्बी और भीतर की ओर घुसी होती हैं। यह भाले ढाल और धनुष बाण बाँधते हैं और बड़े लड़ाकू होते हैं। शिकार तथा मछली पर यह अपनी जीविका चलाते हैं। ये चावल, मक्का आलू और तम्बाकू की खेती करते हैं। शादी के समय वर को किसी न किसी का कटा हुआ सिर कन्या को देना पड़ता है। मृतक शरीर को यह लोग २० फुट नीचे पृथ्वी में गाड़ते हैं।

मायोश्रोस तथा सिलोपने लोग इगोरोत लोगों की भांति ही वस्त्र, आभूषण और शस्त्र धारण करते हैं। अब यह लोग ईसाई हो गये हैं।

इपयूगो जाति के लोग जापानी लोगों से मिलते जुलते हैं। यह लोग खेती करते हैं परन्तु लूट मार पर अधिकाधिक निर्भर करते हैं। यह लोग भाले, ढाल धनुषबाण का प्रयोग करते हैं। प्राण हत्या करना इन लोगों का पेशा सा है। जितने लोगों के यह सिर काटते हैं उतनी मुंदरियां यह अपने कानों में पहिनते हैं।

गद्दाने लोग बड़े काले, गोल आँख वाले तथा लम्बी चपटी नाक वाले होते हैं। इनके मकान ऊँचे ढेरों

पर बने होते हैं। इनमें लगभग आधे ईसाई हो गये हैं।

इतेतापाने जाति के लोग बोंटोक में रहते हैं और इगोरोत लोगों से मिलते जुलते हैं।

ग्वीनानेस—यह लोग इगोरोत जाति की भांति गांवों में रहते हैं। यह लोग सिर काटने के इतने प्रेमी होते हैं कि जब शत्रु नहीं रहता तो आपस में ही लड़ने लगते हैं।

कलावे या इतेव—यह बड़े शान्तिप्रिय किसान हैं। ये चावल तथा तम्बाकू की खेती करते हैं। इस जाति के बहुत से लोग व्यापारी भी हैं।

कम्वाँगा और बयाबोनाने—यह लोग गगयान प्रान्त के दक्षिणी भाग में रहते हैं और ददयाग वर्ण के हैं।

दद्याद लोग इसाबेला के उत्तर-पश्चिम में रहते हैं।

नाबायूगोन यह लोग घाटियों में रहते हैं। उनके रहन सहन अथवा धर्म के बारे में प्रमाणित ज्ञान नहीं है।

अरीपा लोग शान्ति प्रिय हैं और ईसाई धर्म को मानने लगे हैं।

कालिंगा लोगों में चीनी रक्त पाया जाता है।

तिंग्वीयान जाति के लोग बिखरे हुये गावों में रहते हैं। सैन्टियागो नगर ईसाई तिंग्वोयान लोगों का है जो १७३६ ई० में बसामा गया था। यह लोग धान की खेती करते हैं पशु तथा घोड़े पालते हैं और मोम, और चमड़ा तथा लकड़ी की बनाई हुई सुन्दर वस्तुओं का व्यापार करते हैं। इन लोगों में चीनी रक्त पाया जाता है। यह लोग बोमार लोगों की सेवा तथा चिकित्सा बहुत कम करते हैं। बीमार होने पर कुटुम्ब के सदस्यों की बैठक होती है और कुछ रुपया उसकी चिकित्सा के लिये अलग कर लिया जाता है। उस रुपये के व्यय हो जाने पर वह एक स्थान पर लेटा दिया जाता है। एक बालक उसकी मक्खियाँ उड़ाता रहता है। उसे केवल पानी पीने के लिये दिया जाता है। वह उसी अवस्था में मर जाता है। यह लोग आत्मा को मानते हैं और कहते हैं कि निद्रा के समय आत्मा शरीर को छोड़ कर बाहर रमता रहता है इसलिये निद्रा अवस्था में किसी को जगाना नहीं चाहिये। नहीं तो उसके मरने का भय रहता है।

देश दर्शन

अदंग यह एक सभ्य जाति है। इस जाति की भाषा समीपवर्ती दूसरी जातियों से नहीं मिलती जुलती है। यह ईसाई धर्म को मानती है। इस जाति का मुख्य नगर अदन या अदम है।

अपायाओ लोग पहले बड़े लड़ाकू थे परन्तु अब सभ्य हो गये है। यह लोग मक्का, साग तरकारी आदि की खेती करते हैं, तम्बाकू और काकाव उगाते हैं। यह लोग अधिकतर पहाड़ी स्थानों में रहते हैं। धीरे धीरे यह जाति एक सभ्य किसान जाति बन रही है।

कटालंगन और हराया जातियों के लोग पर्वतीय स्थानों में झोपड़ों में रहते हैं। इस जाति के लोग गोदना बहुत गोदाते हैं। हल चलाने के लिये यह लोग भैंसों का प्रयोग करते हैं। मछली का शिकार भी बहुत करते हैं। यह धान की खेती करते हैं। यह लोग साधारण स्वभाव के तथा अतिथि सत्कारी होते हैं। इन लोगों के घर स्वच्छ नहीं होते हैं। इनका स्वभाव ही मैलेपन का है इसी कारण यह अपने द्वारों पर कूड़ा करकट फेंकते हैं। यह लोग मलय निवासियों



की भांति कपड़े पहिनते हैं। चोरी के लिये इनके नियम बड़े कठोर हैं। यह लोग मन्दिरों में पूजा करते हैं।

काटूबङ्गन जाति के लोग जंगली हैं और अपने पड़ोसी ईसाई भाइयों के पशु चुरा ले जाते हैं।

विकोल जाति के लोग सभ्य हैं और ईसाई मत को मानने वाले हैं। इनकी अपनी भाषा अलग है। यह धान, सन, पाट और केले की खेती करते हैं। यह केले के रेशे निकाल कर बाहर भेजते हैं। स्पेन तथा अमरीका के शासन का इन पर काफी प्रभाव पड़ा है।

स्पेन, योरुपीय और फिलीपाइन निवासियों के आपसी सम्बन्ध से मेस्तीज़ो नामक दोगली जाति उत्पन्न हो गई है। इसी प्रकार चीनी पुरुषों और फिलीपिनो स्त्रियों के सम्बन्ध से मेस्तीज़ो-चीनी जाति बन गई है।

इनके सिवा चीनी, जापानी और अमरीकन लोग भी रहते हैं।

विसायास लोग वीर तथा लड़ाकू होते हैं। इनकी भाषा का प्रचार दिन प्रति दिन बढ़ रहा है। यह लोग जङ्गली उपज, माले की गुरियों और पीतल के तार का व्यापार करते हैं।

मामनवा लोग बदमाश तथा दुखी हैं। यह आलू की खेती करते हैं और यह जङ्गली शहद निकालने तथा जङ्गली सुअर का शिकार करते हैं।

मानोबो लोग प्रकृति के पुजारी हैं और बड़े लड़ाकू होते हैं। ये अपने घर लट्ठों पर बनाते हैं और धान, मक्का, आलू, तम्बाकू की खेती करते हैं। इनके मुख्य हथियार ढाल, तलवार, कटार और धनुष बाण हैं। जब इनके किसी नातेदार की मृत्यु हो जाती है तो किसी प्रथम अजनबी पथिक को मार कर ये उस मृत्यु का बदला चुकाते हैं।

मन्दाया लोग अपनी सुन्दरता के लिये प्रसिद्ध हैं। यद्यपि उनके चेहरे काफी चौड़े होते हैं तो भी वे देखने में अच्छे लगते हैं। वह अपनी डाढ़ी तथा भौंह मुँडाये रहते हैं। इनके घर ३० से ५० फुट ऊँचे लट्ठों पर बने होते हैं। एक गांव में चार या पांच घर होते हैं। एक घर में कई कुटुम्ब के लोग एक साथ निवास करते हैं। जब ये लूट मार करते हैं तो घर के सभी प्राणियों को जान से मार डालते हैं। ये अपने पित्रों

की पूजा करते हैं। यही इनका धर्म है। गांव के समीप ये धान और आलू की खेती करते हैं।

मंग्वाँग जाति के लोग गार्दिलेरा सागान में रहते हैं। इनके बीच में ईसाई धर्म का प्रचार हो रहा है।

मोन्तेस शब्द का अर्थ ही पहाड़ी मनुष्य है। यह अधिकतर पहाड़ों पर निवास करते हैं। यह लोग रंग, सजावट; भेष और आभूषण बहुत पसन्द करते हैं। यह अच्छे सामान बनाने वाले होते हैं। इनका प्रधान देवता निगवास है। घर के बड़े बूढ़े देवताओं को फल अर्पण करते हैं और सुअर तथा जंगली चिड़िया का बलिदान करते हैं। शादी का प्रबन्ध कुटुम्ब का सर्दार करता है। यह लोग कई एक स्त्रियां रखते हैं। तटीय नगर के लोग मोम तथा किशमिश का व्यापार करते हैं। चीनी लोग इन्हें धोखा देते हैं और नशीली वस्तुओं का प्रचार इनके मध्य करते हैं जिसका प्रभाव इस जाति पर पड़ रहा है। यह जाति काफी उत्साही तथा सभ्य है। इनकी आबादी के बीच में न्यायालय हैं जो चोरी और दूसरे अपराधों का न्याय करते हैं।

अता लोग कपड़े आदि स्वयं अपने प्रयोग के

लिये बना लेते हैं। यह लोग मोरों का सामना डट कर करते हैं।

गुड्यांग जाति अपो पर्वत के ढालों पर रहती है। धनुष बाण तथा भाले इनके मुख्य हथियार हैं। यह लोग तिधियामा को अपना ब्रह्मा मानते हैं। मर्द तथा स्त्रियां दोनों गहने पहिनते हैं।

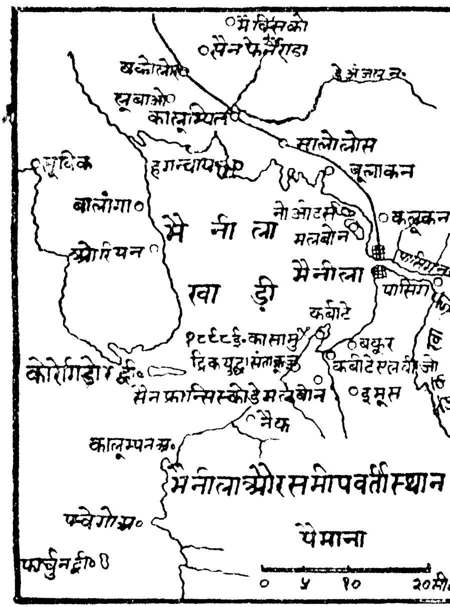
वागोबो लोग अपो के आग्नेय पर्वत के दक्षिणी तथा पूर्वी ढालों पर रहते हैं। यह लोग घोड़े पालते हैं। धान, आलू, कहवा, कोको और केला की खेती करते हैं। जंगली वस्तुएँ मोम, शहद आदि भी यह लोग एकत्रित करते हैं और उसी का व्यापार है। यह अच्छे लोहार हैं और लोहे के सामान तयार करते हैं।

इनके सिवा कालागन, तगाकोलो, दुलांगन, तिरूरे, तगावेली, समेले, बिलाने, सुवानो, मोरो (मुसलमान) तागावोस और चीनी जातियाँ भी इस प्रान्त में रहती हैं।

यह सभी जातियाँ प्रायः असभ्य सी हैं और छोटे छोटे गाँवों में रहती हैं। कुछ खेती भी करती हैं। यह बड़ी लड़ाकू जातियाँ हैं और आपस में लड़ा करती हैं।

कारबार

फिलीपाइन द्वीपसमूह में शक्कर बनाने का काम बहुत उन्नत है। शक्कर बनाने के यहां तीन हजार कारखाने हैं। इनमें १५ करोड़ रुपया लगा हुआ है। धान



कूटने की मिलें प्रायः ५०० हैं। शराब, तेल, सिगार, रस्सी, सीप के बटन बनाने के कारखाने भी बढ़ रहे हैं।

घरेलू धन्धों में कपड़ा बुनने, कातने, अबाका में

(मेनिल्ला सन) का रेशा छुड़ाने, चटाई बुनने, खोपरा (नारियल) और मछली सुखाने का काम प्रधान है।

व्यापार

फिलीपाइन और संयुक्त अमरीका के साथ स्वतंत्र व्यापार होता है और किसी प्रकार का कर नहीं लगता है। १६२७ ई० में संयुक्त राष्ट्र अमरीका के साथ फिलीपाइन का लगभग २८ करोड़ रुपये का व्यापार हुआ था। इसके सिवा दूसरे देशों के साथ लगभग २१ करोड़ का व्यापार हुआ था। सूती या रुई के सामान, लोहा तथा फ़ौलादी सामान और साधारण प्रयोग की वस्तुएँ फिलीपाइन में बाहर से आती हैं। चीनी, खोपड़ा, गरी का तेल और अबाका वहाँ से बाहर भेजा जाता है। फिलीपाइन में अब बैंक भी स्थापित हो गये हैं।

आने जाने के साधन

जब से संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने फिलीपाइन पर अधिकार जमाया है तब से वहाँ अच्छी सड़कें बन गई हैं। फिलीपाइन द्वीप में लगभग ४००० मील पक्की सड़कें और ७८०० मील रेलवे लाइन है। "मेनिला बिजली व.म्पनी" की ओर से मेनिला में और उसके आस पास ५५'६ मील रेलवे लाइन है। यहां पर डाक और तार का अब अच्छा प्रबन्ध हो गया है। यहां पर डाक के लिये किसी प्रकार का कर नहीं लगता है। मेनिला से सीरले २४ दिन में, सैनफ्रान्सिस्को २८ दिन में, न्यूयार्क पनामा या स्वेज़ होकर ४५ दिन में, लन्दन स्वेज़ नहर होकर ३५ दिन में सवारी जहाज़ जाते हैं। आजकल मेनिला रैडियो द्वारा भी संसार के भिन्न-भिन्न भागों से लगा हुआ है। सेबू, आइओलिओ जोलो और जैम्बौंगा में जहाज़ों के ठहरने के लिये घाट बने हुये हैं परन्तु मैनिला में प्रत्येक भांति के जहाज़ों के लिये प्रबन्ध तथा सुविधाएँ हैं। फिलीपाइन में कुल मिलाकर २०० बन्दरगाह हैं। तटीय स्थानों में जहाज़ चलते हैं। पूर्वी द्वीपसमूह, चीन, जापान और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के मध्य जहाज़ी लाइनें हैं।

शासन प्रबन्ध

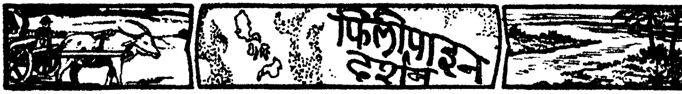
फिलीपाइन पर पहले स्पेन वालों का शासन था। १८९८ ई० में स्पेनिश शासन का अंत हुआ और संयुक्त राष्ट्र अमरीका का सैनिक शासन आरम्भ हुआ। १९०० ई० में मकिन्ले ने फिलीपाइन कमीशन की सर्वप्रथम स्थापना की। यह सभा फिलीपाइन के प्रस्तावित कानून सैनिक गवर्नर के सामने रखती थी और वह उसका निर्णय करता था। ४ जुलाई १९०१ ई० को शासन का अंत हुआ। उस समय टैफ्ट जज वहां का प्रथम सिविल गवर्नर बनाया गया। उसके बाद गवर्नर का नाम बदल कर गवरनर जनरल कर दिया गया। १९०१ और १९०२ ई० में प्रान्तीय तथा म्युनिस्पल सरकारों की स्थापना की गई और फिलीपाइन द्वीप में ३७ प्रान्त संगठित किये गये। २९ अगस्त १९१६ ई० में जोन्स बिल स्वीकार किया गया। फिलीपाइन की व्यवस्थापिका सभा का निर्माण हुआ। १९०७ ई० में उसकी प्रथम बैठक हुई थी। जोन्स बिल के अनुसार इस सभा को कानून बनाने की शक्ति प्रदान की गई और फिलीपाइन के दो निवासी कमिशनरों को संयुक्त राष्ट्र की कांग्रेस

में बिना वोट के वादविवाद करने का अधिकार दिया गया। १९१६ ई० में दो सभाएँ बनाई गईं। प्रतिनिधि सभा में ९१ सदस्य (अब ९२ हैं) और व्यवस्थापिका सभा में २४ सदस्यों की संख्या परमित की गई। सभी सदस्यों का चुनाव फिलीपाइन की प्रजा करती है। २ सेनेट के सदस्यों और ९ प्रतिनिधियों का चुनाव गवरनर जनरल करता है। यह लोग न्वेवा विज़काया, पर्वतीय प्रान्त, अगूसन, बुकिडनान, कोटोबाटो, दबाव, लनाव, सूलू और जम्बौंगा प्रान्तों का प्रतिनिधित्व करते हैं। जोन्स बिल के अनुसार शासन के ६ विभाग बनाये गये हैं। प्रत्येक विभाग का काम एक मन्त्री के अधिकार में है। मन्त्री की सहायता के लिये एक सहायक मन्त्री भी नियुक्त किया गया है। इन विभागों के प्रायः समस्त अफसर फिलीपाइन के निवासी हैं। गवर्नर जनरल, उपगवरनर, आडीटर, डिप्टी आडीटर, पुलीस कमिश्नर, शिक्षा का प्रधान, कृषि, बन, विज्ञान, प्रजा सम्बन्धी कार्य, तटीय आदि स्थानों की देख भाल करने वाले प्रधान विभागों के मन्त्री और मुख्य सभी कार्यकर्ता अमरीकन हैं।

हरीसन गवरनर जनरल की राय से एक सभा सेनेट के सभापति, प्रतिनिधि सभा के सभापति और ६ विभागों के मन्त्रियों की बनाई गई है जो प्रस्तावित नियमों को स्वीकार करते हैं और फिलीपाइन की सरकार की नीति का संचालन करते हैं। १६२८ ई० में इस सभा के सदस्यों की संख्या और भी अधिक कर दी गई है जिससे इस सभा में प्रजा के प्रतिनिधियों की संख्या कुछ और अधिक हो गई है।

न्यायालय—फिलीपाइन में एक सुप्रीम कोर्ट सब से बड़ा न्यायालय है जिसमें प्रधान जज (फिलीपाइन निवासी) और ८ दूसरे जज हैं। इन ६ में ३ देशी हैं। जजों की नियुक्ति संयुक्त राष्ट्र अमरीका का सभापति यू० एस० के सेनेट की सलाह से करता है। २६ जिले के न्यायालयों के लिये एक एक कचेहरी बनाई गई है। मैनिला के लिये एक न्यायालय अलग है। प्रत्येक म्युनिस्पैलिटी का अलग अलग अपना न्यायालय है।

फिलीपाइन द्वीप में ४८ प्रान्त तथा उपप्रान्त हैं। मैनिला का प्रान्त अलग है। ३६ प्रान्तों का शासन वहां के चुने हुये गवरनरों द्वारा होता है। प्रान्तीय सभा



में दो चुने हुए सदस्य तथा एक कोषाध्यक्ष होता है। दूसरे प्रान्तों के गवरनरों की नियुक्ति संयुक्तराष्ट्र सरकार के द्वारा होती है। म्युनिस्पैलिटी में सभापति उपसभापति और एक सभा होती है जो नगर का प्रबन्ध करती है। बड़े बड़े गांवों और कस्बों का भी प्रबन्ध अलग अलग सभाओं के हाथ में है।

तागल लोगों के खेल तमाशे

तागल लोगों का सबसे अधिक आनन्ददायक खेल मुर्गों का लड़ाना है। मुर्गों के लड़ाने के लिये प्रत्येक प्रान्त में स्थान बनाये गये हैं उन्हीं स्थानों में मुर्गे लड़ाये जाते हैं। यह स्थान रविवार और त्योहार के दिनों में खुलते हैं। शेष दिनों में सरकारी आज्ञा द्वारा ही स्थान खोले जा सकते हैं। मैनिला के अधिकांश निवासी मुर्गे केवल लड़ाने के लिये ही पालते हैं। मुर्गे पालने वाले लोग इस रोज़गार में काफी लाभ उठाते हैं।

कभी कभी घोड़ों की लड़ाई का तमाशा भी होता है। फिलीपाइन के टट्टू जब एक दूसरे से लड़ते हैं तो

एक दूसरे को बड़ी चोट पहुँचाते हैं। लड़ते समय यह बड़े भयानक हो जाते हैं। उस समय यदि कोई उन्हें छुड़ाने का प्रयत्न करता है तो घोड़े उसी को चोट पहुंचाते हैं। एक बार दो घोड़े लड़ रहे थे। एक व्यक्ति ने उन्हें छुड़ाना चाहा इस पर एक घोड़े ने उस मनुष्य की जांघ अपने दांतों से पकड़ कर उठा लिया जिससे वह मांस निकाल ले गया और केवल हड्डियां शेष रह गईं उस गहरी चोट से वह व्यक्ति आखिर मर गया। सांड के लड़ाने का तमाशा भी कहीं कहीं पर होता है।

भारतवर्ष की भांति पतङ्गबाजी का चाव भी फिलोपाइन के निवासियों को है। वर्ष के आरम्भ काल में जब उत्तरी-पूर्वी मानसून चलती है तो पतङ्ग उड़ाने का खेल आरम्भ होता है। बाजियां लगा कर लोग पतङ्ग लड़ाते हैं जो व्यक्ति अपने विपक्षी के पतङ्ग की डोर पेंच डाल कर काट देता है वही विजयी माना जाता है। पतङ्गबाजी देखने के लिये दर्शकों की बड़ी भीड़ लगती है।

तागल लोग नाटक और थियेटर के भी शौकीन होते हैं। वहाँ पर अधिकांश खेल सुखान्त नाटक के ही होते हैं। त्योहार के समय बड़े नगरों में खुले स्थानों

में नाटक होते हैं जिसमें नागरिक लोग भाग लेते हैं। यह नाटक बड़ी तयारी के साथ खेले जाते हैं। लड़कियाँ भी नाटकों में बड़ी तयारी के साथ भाग लेती हैं। कहा जाता है कि जो लड़कियाँ इन नाटकों में भाग लेती हैं वह एक वर्ष के भीतर ही सोहागवती (ब्याही) हो जाती है। इसी कारण से लड़कियाँ अपना खेल बड़ी तयारी के साथ दिखाती हैं और दर्शक युवकों के हृदय को मोह लेती हैं। सरकस का प्रचार भी फिलीपाइन में है। लोग सरकस देखने में काफी धन व्यय करते हैं।

इन खेलों के सिवा और दूसरे प्राचीन खेल तमाशे भी गांवों में खेले जाते हैं।

तागल नाटक की एक कहानी नीचे दी जाती है। यह नाटक ग्रेनाडा के युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। चूंकि फिलीपाइन निवासी रक्त के बड़े प्यासे होते हैं इसलिये खेल करते समय वह सचमुच ही लड़ जाते हैं और कितने ही पात्र मर जाते हैं। खेल के अंत में उनका मरना भी खेल ही हो जाता है।

एक ईसाई राजा था उसके एक बड़ी रूपवती कन्या थी। एक दिन जब वह अपने दर्बार में बैठा हुआ था

तो एक मुसलमान राजा का दूत घोड़े पर सवार होकर आया उसने ईसाई राजा से राजकुमारी की मांग अपने राजा के लिये किया और राजकुमारी के न देने पर चाकू दिखा कर युद्ध करने की धमकी दी और चला गया।

उसके चले जाने पर ईसाई राजा ने अपने मन्त्रियों की सभा बुलाई और दूत की बात पर निर्णय करने के लिये कहा। मन्त्री बूढ़े थे किसी का भी साहस लड़ाई लेने का न हुआ। इस पर राजकुमारी को दूत को सौंपने की बात तय हुई।

उसके बाद मुसलमान दूत बुलाया गया और उसे दुखी दशा में राजकुमारी सौंप दी गई। ठीक उसी समय एक ईसाई नवयुवक वहां अपने साथियों के साथ कूद पड़ा और राजकुमारी को देने से इन्कार कर दिया। मुसलमान दूत नाराज़ हो कर बदला लेने की धमकियां देता हुआ चला गया। उसके बाद युद्ध आरम्भ हुआ और कितने ही वीर पात्र मारे गये। यह नाटक दो दिन तक लगातार होता रहा। आखिर सत्य की विजय हुई। और ईसाई युवक विजयी हुआ जिस लड़की ने राजकुमारी

का पार्ट किया था उसके साथ ईसाई नवयुवक पात्र का ब्याह हो गया ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सचमुच ही नाटकों के अविवाहित नायिका, नायक तथा दूसरे पात्रों के विवाह का निश्चय नाटकों में ही हो जाता है। यह नाटक दूसरे देशों के नाटकों से इस बात में भिन्न है कि इनमें कई दिन लगते हैं और नाटक के दृश्यों का सच्चा प्रभाव नाटक के पात्रों तथा दर्शकों पर पड़ता है ।



संक्षिप्त इतिहास

प्राचीन काल में फिलीपाइन द्वीपसमूह पर हिन्दू सभ्यता का गहरा प्रभाव पड़ा था क्योंकि उसका सम्बन्ध जावा, सुमात्रा और मलय प्रायद्वीप के दूसरे समीपवर्ती दीपों से था जहां पर हिन्दू राज्य थे। फिलीपाइन भाषा में संस्कृत के शब्द अब भी मिलते हैं। जब स्पेन वाले वहां गये थे तो काफी संस्कृत शब्द फिलीपाइन भाषा में थे और उस पर उन शब्दों का गहरा प्रभाव था।

१६ मार्च १५२१ ई० को सर्व प्रथम स्पैनी लोग फिलीपाइन द्वीप में गये। यह काल फिलिप राज का था इसी कारण द्वीपों का नाम भी उसी के नाम पर फिलीपाइन पड़ गया है। स्पेन वालों के सिवा वहां पुर्तगाली, डच, इंगलिश और फ्रान्सीसी लोग भी गये परन्तु स्पेन वालों के सिवा किसी की दाल वहां नहीं गली। स्पेन वालों से वहां के मुसलमानों से बहुत युद्ध भी हुआ जिसमें मुसलमानों की हार हुई। मुसलमानों को स्पैनी लोग मोरो कहते थे। दसवीं से तेरहवीं शताब्दी तक चीन और फिलीपाइन द्वीपों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध का इतिहास भी मिलता है। फिलीपाइन द्वीपों को उन्नति देने तथा संसार में उनका नाम फैलाने में स्पेन ने



काफी सहायता की। स्पेनी लोगों के साथ वहां के निवासियों का बहुत समय तक अच्छा सम्बन्ध रहा परन्तु अन्त में शासक तथा गुलाम का युद्ध अनिवार्य ही है। इसी कारण उनमें झगड़ा हुआ। जब स्पेन और पुर्तगाल राज्य मिले तो उनका झगड़ा समाप्त हो गया। डच लोग भी मलक्का द्वीप पर अधिकार करने के बाद फिलीपाइन से हट गये। १७६२ ई० में ब्रिटिश जहाज़ मेनिला गये थे परन्तु १७६३ ई० की पेरिस संधि के पश्चात् वह भी वहाँ से अलग हो गये थे। १८०६ ई० में वहां एक ब्रिटिश व्यापारिक घर बनाया गया था। उसके पश्चात् कभी फिलीपाइन का व्यापार विदेशियों के लिये खुल जाता था और कभी बन्द कर दिया जाता था। उसके बाद फिलीपाइन में विदेशी सरकारों के राजदूतों के घर बन गये जिसमें इंगलैंड और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के भी थे।

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम अर्ध भाग में फिलीपाइन में केवल २००० से ५००० तक स्पैनी लोग थे। मेनिला तथा दूसरे कुछ प्रधान स्थानों में स्पैनी भाषा बोली जाती थी। भिन्न-भिन्न भाषा होने के कारण फिलीपाइन के

लोगों में संगठन नहीं था। १८६६ ई० में स्वेज़ नहर के खुलने के बाद फिलीपाइन के युवक स्पेन तथा दूसरे पश्चिमी राष्ट्रों में विद्या पढ़ने के लिये जाने लगे।

१८७२ ई० में क्वाइट नामक स्थान पर फिलीपाइनो सैनिकों ने स्पेन की सरकार के विरुद्ध बलवा कर दिया। और स्वतंत्रता की मांग उठाई। मैनिला में भी बलवा कराने का यत्न किया गया परन्तु सफलता नहीं हुई। बलवा दबा दिया गया और बलवा करने वाले सभी पकड़ लिये गये कुछ को कारागार की हवा खानी पड़ी और कुछ मार डाले गये। फांसी पर लटकने वालों में तीन वहां के निवासी पुजारी भी थे जो निर्दोष थे और जिनका दोष कभी नहीं बतलाया गया।

धीरे धीरे फिलिपिनो राष्ट्रीयता का विकास होने लगा। रीज़ाल, मार्सेलो डेलपिलर, लोपेज जेना और अपोलिनारिओ आदि नेताओं ने बड़े बड़े राष्ट्रीय आन्दोलन किये। यह सभी युवक "फिलिपिनो दल" के नेता थे। १८६१ ई० में रीज़ा ने हांगकांग में फिलीपिना नामक संस्था स्थापित की। १८६२ ई० में उसकी एक शाखा मैनिला में खोली गई। १८६६ ई० में रीज़ाल

पकड़ा गया और ३० दिसम्बर १८९६ ई० को उसे प्राण दण्ड दिया गया। उसी समय कुछ दूसरी राजनैतिक संस्था का भी जन्म हुआ जिसमें काटीपुनान मुख्य है। इस संस्था के सदस्यों की सख्या १ लाख से ४ लाख के बीच में थी। २६ अगस्त १८९६ ई० को वहां बलवा हुआ। बलवे का केन्द्र क्वाइट स्थान था जहां पर एमिलिओ अग्विनाल्डो का नाम सर्व प्रथम इतिहास में प्रसिद्ध हुआ स्पेन ने २८ हज़ार सेना फिलीपाइन में भेजी और वहां के निवासियों को शस्त्र-बल से दबा दिया परन्तु रीज़ाल की फांसी के पश्चात् पुनः बलवा हो गया और पंगासिनान, जम्बलेस और इलोकोस आदि प्रान्तों में फैल गया। फरनैण्डो प्रीमो डेरिवेरा की सहायता से फिलीपाइन निवासियों और स्पेनिश सरकार के मध्य संधि की गई। १५ फरवरी १८९८ ई० को "मैने" नामक जहाज के जलने पर अमरीका तथा स्पेन के मध्य युद्ध छिड़ गया। पहले भी अमरीकन लोग फिलीपाइन निवासियों की सहायता स्पेन की सरकार के विरुद्ध करते रहे थे।

युद्ध के आरम्भ हो जाने पर फिलीपाइन निवा-

सियों ने ६ सितम्बर १८६८ ई० को अग्वीनाल्डो के सभापतित्व में एक प्रजातंत्र राज्य बनाया और स्पेन के शासन से स्वतंत्र होने की घोषणा की। मलोलोस प्रजातंत्र राज्य की राजधानी बनाया गया। अपोलिनरिओ मबीनी नामक व्यक्ति सभापति का मुख्य सलाहकार बना।

१५ सितम्बर को क्रान्तिकारी सभा की बैठक हुई और स्वतंत्रता की स्वीकृति की गई। नवम्बर और दिसम्बर मास में बिसायास स्थान पर क्रान्तिकारी न्यायालय स्थापित किये गये। स्पेन को युद्ध में हार हुई और अमरीका विजयी हुआ तो उसने फिलीपाइन पर अपना अधिकार जमाया।

धीरे धीरे अमरीकन और फिलीपिनों के सम्बन्ध भी बिगड़ने लगे। वहां के निवासी पूर्ण स्वतंत्रता के भूके थे और अमरीकन अपना अधिकार उन पर रखना चाहते थे। २३ जनवरी १८६६ को मलोलोस विधान की घोषणा की गई। अग्बीनाल्डो फिलीपाइन का सभापति बनाया गया। ४ फरवरी को मेनिला के समीपवर्ती स्थानों में अमरीकन और फिलीपिनो में झगड़े के सब

कारण उपस्थित हो गये और झगड़ा हो गया। प्रातः काल फिलीपिनों को कई स्थानों पर हार हुई। जब लड़ाई हो ही रही थी तभी अग्वीनाल्डो ने संयुक्त राष्ट्र के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दिया।

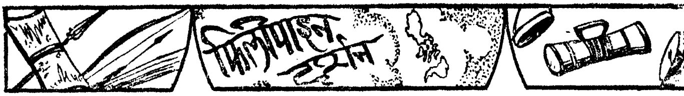
अमरीका से सेना फिलीपाइन भेजी गई और ३१ मार्च १८६६ ई० को अमरीकन सेना ने मोलोस पर अधिकार जमा लिया। फिलीपिनो सरकार उत्तर की ओर हट गई। मार्च १६०१ ई० में अग्वीनाल्डो पकड़ लिया गया और १६ अप्रैल १६०२ ई० में जनरल मिग्वेल मलवर भी पकड़ा गया तो फिलीपिनो का आन्दोलन बिलकुल दब गया।

उसके बाद मिस्टर टैफ्ट ने पोप के साथ स्वयं महन्तों और सन्यासियों की भूमि के सम्बन्ध में बातचीत की और फिलीपिनो लोगों को उस भूमि के खरीदने की आज्ञा मिल गई। चर्च को राज्य के सम्बन्ध से अलग कर दिया गया। १६०५ ई० में मि० टैफ्ट (युद्ध मंत्री) फिलीपाइन आये। १६ अक्तूबर १६०७ ई० में प्रतिनिधियों की सभा टैफ्ट ने बुलाई जिसने निर्णय किया कि स्पेनी भाषा के साथ ही अँग्रेज़ी भाषा का प्रयोग सरकारी

स्थानों और काग़ज़ों में १९१३ ई० तक होता रहेगा उसके बाद सरकारी भाषा अँग्रेजी हो जावेगी। ६ अगस्त १९०९ ई० को अमरीका की कांग्रेस ने फिलीपाइन के साथ बिना कर के व्यापार करने की घोषणा किया। डबलू कमेरोन फोर्बेस के शासन-काल में फिलीपाइन में सड़कें तथा पुल बनाये गये। शिक्षा की ओर ध्यान दिया गया और अधिक संख्या में स्कूल स्थापित किये गये। शिक्षा के प्रचार के साथ ही साथ फिलीपिनो लोगों को सिविल सर्विस में स्थान मिलने लगे थे। धीरे धीरे उनकी मात्रा बढ़ती गई और १९१२ में उनकी संख्या ७९ प्रतिशत, १९१४ में ६४ प्रतिशत और १९१० में ९८ प्रतिशत हो गई।

१९१३ ई० में गवर्नर जनरल हरीसन नियुक्त हुये और उन्होंने अमरीकन सभापति की घोषणा की कि "जितने क़दम हम उठाते हैं वह स्वतंत्रता प्रदान करने के लिये ही हैं। हम द्वीपों को पूर्ण रूप से स्वतंत्र बनाना चाहते हैं"।

प्रेसीडेण्ट विलसन ने फिलीपाइन के लोगों को और अधिक स्वतंत्रता प्रदान की। १९१६ ई० में वहां



की सरकार ने मैनिला रेलवे कम्पनी के सामान को खरीद लिया। उसी वर्ष फिलीपाइन के राष्ट्रीय बैंक की स्थापना की गई। उसके बाद राष्ट्रीय कोयले, सेमेन्ट आदि की कम्पनियां स्थापित की गईं। लोहे और पिट्रोल की कम्पनियां भी खुल गईं।

प्रेसीडेन्ट हार्डी ने अपने शासन काल में फिलीपाइन की दशा की जांच करने के लिये एक कमीशन भेजा। जिसका नाम उड फोर्बेस था। इस कमीशन ने फिलीपाइन के राष्ट्रीय भावों के विरुद्ध राय दी। ५ अक्तूबर १९२१ ई० को उड फिलीपाइन का गवर्नर जनरल बनाया गया। उड का बड़े जोरों से विरोध हुआ। १९३७ ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

२७ जुलाई १९२३ ई० को राज्य सभा के सदस्यों ने विरोध रूप में स्तीफा दे दिया। उड ने त्यागपत्र स्वीकार कर लिया और फिर उप मन्त्रियों की सहायता से शासन करने लगा।

१९२६ ई० में सभापति कूलिज ने कार्नल कार्मी ए० टामसन को फिलीपाइन की दशा की जांच करने के लिये भेजा। उसने अपनी जांच की और रिपोर्ट किया

कि अभी पूर्ण स्वतंत्रता का प्रश्न हटा दिया जाय परन्तु फिलीपिनो सभा को अधिक से अधिक जिम्मेदार बना कर उसके और अमरीकन शासन के मध्य जो विरोध है उसे भर दिया जाय। फिलीपाइन द्वीप के शासन के लिये एक स्वतंत्र विभाग बनाया जाय। मिंडानाव और सूलू द्वीप फिलीपाइन से अलग न किये जावें। मोरो देश में अपने नियम को इस प्रकार ढीला करे कि रबर कहवा और दूसरी उपज के लिये उसे धन प्राप्त हो सके।

उसके बाद अधिक उत्तरदायी सरकार की स्थापना फिलीपाइन में हुई। १९२८ ई० में स्टिम्सन (वहां के गवर्नर) ने अपना मंत्री मंडल भी प्रजा के उत्तरदायी नेताओं को बनाया और राज्य सभा की स्थापना किया।

मार्च १९२९ ई० में स्टिम्सन वापस बुला लिया गया और हूवर मंत्री मण्डल में वह युद्ध मंत्री बनाया और उसके स्थान पर ड्वीट डब्लू डेविस गवर्नर जनरल बनाया गया। १९४५ ई० में फिलीपाइन को पूर्ण

स्वाधीनता प्रदान करने के लिये संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने वचन दिया।

इधर १९१६ ई० के बाद से जापानी प्रभाव फिलीपाइन पर व्यापारी तथा आर्थिक दृष्टि से बढ़ रहा था। वहां पर बड़े बड़े जापानी सौदागर टिक गये हैं। अभी हाल ही में जापान ने फिलीपाइन द्वीप (और दूसरे स्थानों के आक्रमण के साथ ही साथ) पर आक्रमण किया है और मैनीला आदि स्थानों पर अमरीकन जलसेना को भीषण हानि पहुंची है।



फिलीपाइन द्वीप पर नया आक्रमण

फिलीपाइन द्वीपसमूह पश्चिमी प्रशान्त महासागर का एक बड़ा पहरेदार है। इस द्वीप पर अधिकार किये बिना जापान के लिये पूर्वी द्वीपसमूह की ओर बढ़ना कठिन था। प्रायः पांच वर्ष से चीन में फँसा हुआ जापान संयुक्तराष्ट्र अमरीका से लोहा लेने में झिझकता था। अमरीका का व्यापार जापान के बड़े काम का था। पर धीरे धीरे युद्ध का आवश्यक सामान कम होने लगा। अन्त में अमरीका में जो जापानी पूँजी (सारन्त) थी वह ठंडी कर दी गई। ब्रिटेन ने भी अमरीका का अनुकरण किया। उधर जर्मन सेनाओं के लगातार हमले ने रूसियों की स्थिति चिन्ताजनक कर दी जिस प्रकार फ्रांसीसी सेनाओं के ढीले पड़ते ही इटली युद्ध में शामिल हो गया उसी प्रकार आशंका थी कि जापान अपने मित्र जर्मनी को प्रसन्न करने के लिये कहीं पूर्व की ओर से रूस पर आक्रमण न कर दे। लेकिन चांङ्कोफेंग की क्षणिक घटना से जापान रूस की इस ओर की स्थिति और सैनिक शक्ति को ताड़ गया था। विकट संकट में पड़ने पर भी



रूस ने ब्लाडीवोस्टक और साइबेरिया की सेना को पश्चिम की ओर कभी नहीं हटाया। इसलिये रूस को व्यर्थ छेड़ने की अपेक्षा जापानी राजनीतिज्ञों ने अपनी सेनायें दक्षिण की ओर भेजनी आरम्भ कर दीं।

फ्रांस की सरकार पर ज़ोर डलवा कर जापान ने फ्रांसीसी इन्डोचीन पर अपना अधिकार पहले ही कर लिया था। थाई (स्याम) देश में जापान का प्रभाव बढ़ने लगा। इस स्थिति से संयुक्त राष्ट्र अमरीका, ब्रिटेन और हालैंड के अधिकृत प्रदेश सतर्क होने लगे। अपनी अपनी सैनिक रक्षा का प्रबन्ध करने के अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने जापान से अनुरोध किया कि दक्षिण की ओर अपनी सेनाओं के भेजने की नीति स्पष्ट कर दे। और भी कई प्रश्न थे। इन सब पर बहस करने के लिये जापान के कुछ राजनीतिज्ञ वाशिंगटन गये। बहस लम्बी चली। कभी निराशा की घटा छा गई। कभी कुछ आशा की झलक दिखाई देने लगी।

गत (१९४१ के) दिसम्बर मास में फिलीपाइन द्वीपसमूह पर युद्ध के बादल मँडराने लगे। जापान के प्रधान मन्त्री जनरल टोजो ने अपने भाषण में कहा कि

देश दर्शन

संयुक्त राष्ट्र अमरीका और ब्रिटेन को एशिया से भगा देना चाहिये। राष्ट्रपति रूज़वेल्ट इस भाषण से भयभीत होकर अपनी छुट्टियों के कार्यक्रम को स्थगित करके वार्मस्प्रिंग से वाशिंगटन आ गये।

हांगकांग के ब्रिटिश बैंक ने अपना प्रधान कार्यालय वहां से उठा कर सिंगापुर में बना लिया। संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने जापान का व्यापारिक घेरा घोषित किया पर थाई देश में विदेशी अफवाहों का कोई असर न पड़ा। आस्ट्रेलिया के क्रूज़र (सिडनी) के डूबने से कुछ सनसनी अवश्य फैली। चार दिसम्बर को ऐसा जान पड़ा कि जापान और अमरीका के बीच किसी प्रकार का समझौता न हो सकेगा। जापान के उत्तर से अमरीका को सन्तोष न हुआ। फ्रांसीसी इण्डोचीन में १,६०,००० जापानी सिपाही आ गये। जापानी सेना और अधिक संख्या में फिर आई। फिलीपाइन द्वीप समूह के गवर्नर और सेनापति ने आपस में परामर्श किया। और फिलीपाइन द्वीप की राजधानी मनिल्ला शहर के अनावश्यक नागरिकों को आदेश दिया कि वे मनिल्ला नगर को खाली कर दें।

८ दिसम्बर सोमवार को प्रातःकाल ६ बजे जापान ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका और ब्रिटेन से युद्ध छेड़ दिया। इस समाचार के फैलने के साथ ही जापान ने पर्ल बन्दरगाह, मनिल्ला, फिलीपाइन द्वीप, गुआम, हानोलूलू (हवाई द्वीप) और सिंगापुर पर एकदम आक्रमण कर दिया। इसके साथ ही जापान ने पूरे शंघाई शहर पर अधिकार कर लिया और थाई देश पर चढ़ाई कर दी। उत्तरी मलय प्रायद्वीप में भी जापानी फौजें उतार दी गईं। इस प्रकार फिलीपाइन द्वीप समूह युद्ध क्षेत्र में आ गया। मनिल्ला तथा दूसरे संकटपूर्ण स्थान (जिन पर आक्रमण होने की आशंका थी) खाली कर दिये। फिलीपाइन द्वीपसमूह के प्रधान ने प्रत्येक नागरिक को अपने कर्तव्य पथ पर डटे रहने के लिये आदेश दिया। साथ ही यहां एक प्रकार का फौजी शासन (मार्शल ला) घोषित कर दिया गया।

९ दिसम्बर को जापानियों ने फिलीपाइन द्वीप के कई द्वीपों पर घोर चढ़ाई की। इससे भारी हानि हुई। देवाओ द्वीप के पास जापानी हवाई जहाज़ों ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रेस्टन नामी डेस्ट्रायर (जहाज)

को डुबा दिया और फोर्ट स्टाट्सनबर्ग पर बम्ब वर्षा की कुछ जापानी फौजें मनिल्ला से ६० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर लूबांग द्वीप में उतर गईं। सोमवार की रात को मनिल्ला नगर पर विकराल बम्ब वर्षा हुई। इससे यहाँ भारी आग लग गई। कहा जाता है इसमें जापानी जासूसों का हाथ था। कुछ जापानी फौज पास के द्वीप में उतर गई। हवाई अड्डे पर जापानी आक्रमण से संयुक्त राष्ट्र अमरीका के २०० फौजी अफसर घायल हुये। फोर्ट विलियम मोकिनले, निकलस एअर फोल्ड और रेडियो कार्पोरेशन पर भी जापानी हवाई जहाजों ने बम्ब गिराये। पार्क फील्ड एअर बेस में २०० मनुष्य घायल हुये। लूज़न द्वीप के उत्तरी भाग में क्लार्क फील्ड सबसे बड़ा हवाई अड्डा है। यहाँ भी हवाई हमला हुआ। मिंडनाओ द्वीप में सब से बड़ी जापानी बस्ती है। यहाँ भी बम्ब गिराये गये। कैम्प ओर्ड (मनिल्ला से १०० मील उत्तर) और पलवान द्वीप में बम्ब गिरे। दावाओ, बागुइओ और लूज़न द्वीप के तालीओ स्थान पर भी हवाई हमले हुये। बागुइयो में फिलोपाइन द्वीप की संरक्षित सेना रहती है। यह पहाड़ी

स्थान मनिल्ला से २७० मील दूर है। रात को इन हमलों से बचने के लिये फिलीपाइन द्वीपसमूह में यह आज्ञा दी गई कि रात को प्रकाश न किया जावे। १० दिसम्बर को जापानी सेना लूज़न के उत्तरी भाग में विगान से अपारी तक भारी संख्या में उतर आई। तूगूगाराओ में जापानी फौज के उतरने के अवसर पर संयुक्त राष्ट्र अमरीका के हवाई जहाजों ने गोले गिराये। एक अमरीकन एअर क्राफ्ट केरियर पर जापानी हवाई हमला हुआ। आरम्भ में सैन फर्नांडो (लूज़न) के उत्तर में जापानो सेना को रोकने का प्रयत्न किया गया लेकिन जापानी इतनी अधिक संख्या में थे कि उनको रोकना असम्भव हो गया। कुछ जापानी सिपाही मनिल्ला से २०० मील उत्तर-पश्चिम की ओर पेरेचूट द्वारा उतरे। निकलस एअर फील्ड, फोर्ट विलियम मेकनी और नेल्सन एअर फील्ड पर जापानियों ने बम्ब गिराये।

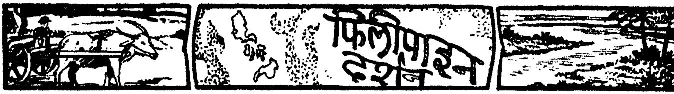
१२ दिसम्बर को फिलीपाइन के प्रधान द्वीप लूज़न के दक्षिणी भाग में भी जापानी सेना उतर गई। उत्तरी भाग में और अधिक जापानी सिपाही उतरे। केवायट

के जहाजी अड्डे पर भीषण हमला हुआ। लूज़न के उत्तरी प्रान्त ईसा वेला में लागन के पास पेराचूट द्वारा जापानी सिपाही उतरे। लूज़न के पश्चिमी तट पर जापानी सेना न उतर सकी। जापानी हवाई हमले जारी रहे।

लेगास्पी के पास (लूज़न द्वीप के धुर दक्षिणी सिरे पर) फिर कुछ जापानी सेना उतरी। जम्बेल के समीप जापानी जहाज़ एकत्रित हुये। हवाई हमले पूर्ववत जारी रहे।

१३ दिसम्बर को सीबू और क्लार्क फील्ड पर जापानी हवाई हमले हुये। जापानी हवाई जहाज़ अधिक संख्या में पंक्ति बना कर मनिल्ला नगर पर बम्ब गिराने आये। अमरीकन हवाई जहाज़ों ने उन्हें रोकने का प्रयत्न किया लेकिन वे जापानी पंक्ति न तोड़ सके। रात को अँधेरा रहने पर भी जापानी जासूसों ने गुब्बारे उड़ा कर सैनिक स्थानों का भेद दिया। सीबू द्वीप के सीबू नगर और क्लार्क फील्ड पर फिर हमला हुआ।

१४ दिसम्बर को फिलीपाइन द्वीप की सैनिक स्थिति में कोई परिवर्तन न हुआ।



१५ दिसम्बर को प्रोलांग्पो के जहाज़ी अड्डे पर जापानियों ने हमला किया और दूसरे स्थानों पर बम्ब गिराये।

एक सप्ताह की शान्ति के बाद विशाल जापानी जल सेना लिनोयन की खाड़ी की ओर बढ़ने लगी। मनिल्ला और कई दूसरे नगरों पर जापानियों ने हवाई हमले किये। मिंडनाओ द्वीप में दावाओ के पास भीषण युद्ध हुआ। बालेर के खुले नगर पर भी जापानी हमला हुआ।

लूज़न द्वीप के एन्टीमोनान, मौबान और नासुग्बू के पास जापानियों ने पहले से कहीं अधिक संख्या (१,००,०००) में सेना उतार दी। लिंगायन की खाड़ी के पास भीषण युद्ध हुआ। मनिल्ला नगर को बचाने में असमर्थ होकर संयुक्त राष्ट्र अमरीका की स्थानीय सरकार वहां से हट गई और नगर को खुला नगर घोषित कर दिया।

३० दिसम्बर को जापानियों ने उत्तर और दक्षिण की ओर से मनिल्ला पर चढ़ाई की।

पहला दल बीस तीस की टोलियों में उतरा। इस

पर संगीनों की मार पड़ी। जापानी सिपाही बचाव के लिये टीन की चद्दर बाहों में पहने हुये थे। फिर भी उनकी भारी हानि हुई। अधिक संख्या बढ़ने पर अमरीकन सेना के पैर उखड़ गये। आगे चल कर अमरीकन सेना ने अपनी लाइन (पंक्ति) को छोटा करके १२० मील लम्बा बना लिया।

१ जनवरी को अमरीकन सेना को फिर पीछे हटना पड़ा। मनिल्ला नगर संकट में पड़ गया।

२ जनवरी को मनिल्ला जापानियों के हाथ आ गया। अमरीकन सेना ने केवाइट का जहाज़ी अड्डा भी खाली कर दिया। इस प्रकार २४ दिन की घमासान लड़ाई के बाद जापानी फौजें मनिल्ला नगर में घुस आईं। इस नगर की जनसंख्या प्रायः ६ लाख है। अमरीकन फौजें छोटी छोटी टोलियों में बंट कर पहाड़ी स्थानों को चली गईं। वहां से छिप कर जापानियों पर हमला करने का इन्होंने निश्चय किया। इन्हीं २४ दिनों में जापानी फौजें उत्तर से उतरने के स्थान से २६० मील बढ़ आईं।

३ जनवरी को जापानी हवाई जहाजों ने कारिग्डार



द्वीप पर पांच घण्टे बम्ब वर्षा की। जिन स्थानों पर भागी हुई अमरीकन सेना अपना संगठन कर रही थी उन स्थानों पर भी जापानी हवाई जहाजों ने आक्रमण किये। अमरीकन सेना पीछे हटते हटते बालंगा प्रायद्वीप पर पहुंच गई जो मनिल्ला की खाड़ी के उत्तर में है। कुछ अमरीकन सेना अंधेरे में छिप कर कोरिगडार के किले में पहुँच गई। इससे जापानी लोग कोरिगडार पर भीषण बम्ब वर्षा करने लगे। मनिल्ला नगर पर अधिकार करते ही जापानियों ने आज्ञा निकाली कि गोरी जाति के अमरीकन, अंग्रेज आदि मनिल्ला नगर निवासी रात को घर से बाहर न निकलें। यदि इस आज्ञा का उल्लंघन करेंगे तो वे गोली से उड़ा दिये जायेंगे। यह आज्ञा वहां के मूलनिवासी काली जाति के लोगों के लिये लागू नहीं है। इससे अमरीका वालों को भारी शिकायत हुई।

५२ हवाई जहाज़ कारिग्डार पर लगातार बम्ब गिराते रहे।

६ जनवरी को मनिल्ला की खाड़ी के दुर्गों; कारीग्डार और मेरीवेल्स पर अधिक ज़ोर से जापानी हमले हुये।

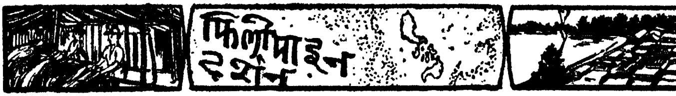
अमरीकन हवाई जहाज़ों ने जापान के जहाज़ों पर आक्रमण किया। ७ जनवरी को हवाई हमलों के अतिरिक्त उस छोटी लाइन (पंक्ति) पर भीषण लड़ाई हुई जो अमरीकन जनरल मेक आर्थर ने स्थापित कर ली थी। आर्थिक लाभ उठाने के लिये जापान ने फिलीपाइन द्वीपसमूह में अपने बैंक स्थापित कर लिये।

८ जनवरी को कोई जापानी हमला नहीं हुआ। जापानी हवाई जहाज़ केवल निरीक्षण करने के लिये उड़ते रहे। अब तक के हवाई हमलों से फिलीपाइन द्वीपसमूह में प्रसिद्ध नगर (बालेर, सेंटारोसा, काम्बा, तारलक, अरायत, केमिलिंग, सैन फर्नांडो आदि) जर्जर हो गये।

९ जनवरी को अमरीकन सेनापति मेक आर्थर ने अपनी छोटी लाइन को हटा कर पम्पांगा प्रान्त के एक कोने में स्थापित कर ली। इसके दाहिनी ओर पम्पांगा नदी का दलदल और डेल्टा है। बाईं ओर काबूसीलान पर्वत हैं।

११ जनवरी के हमले में दलदल और पहाड़ी रुकावट होने के कारण जापानियों को पीछे हटना पड़ा।

१२ जनवरी को जापानियों ने इस ओर और अधिक



फौज भेजी लेकिन एक जापानी फौजी टोली को भारी क्षति हुई।

१३ जनवरी को जापानी हवाई जहाज़ों ने फिली-पाइन के निवासियों में परचे बांटे जिसमें घोषणा किया कि उन पर किसी प्रकार का अत्याचार नहीं किया जायगा। लेकिन सेना पतियों ने आज्ञा निकाली है कि यदि कोई जापानी सिपाही को मारने का प्रयत्न करेगा तो वह गोली से उड़ा दिया जायगा। यदि आक्रमणकारी का पता न लगेगा तो पड़ोस के १० प्रतिष्ठित सज्जन नज़रबन्द कर लिये जांयगे।

१५ जनवरी को कारिग्डार और मनिल्ला की खाड़ी पर हवाई हमले जारी रहे। मेक आर्थर की छोटी सेना अपने प्राकृतिक दुर्ग में डटी रही।

१६ जनवरी को जापानी सेनाओं ने अमरीकन सेनाओं की टोलियों पर भीषण हमले किये।

फिलीपाइन द्वीपसमूह में अमरीका की ओर से छोटी मोटी लड़ाइयां तो शायद चलती रहें पर वास्तव में यहां जापानी सेना का प्रभुत्व स्थापित हो गया। अमरीकन लोगों के हाथ में प्रायः ४०० वर्गमील से अधिक प्रदेश नहीं है।